Toppersnotes®
Unleash the topper in you

JPSC

राज्य सिविल सेवा

झारखण्ड लोक सेवा आयोग (JPSC)

पेपर - 3A || भाग - 1 & 2

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	1
2	वैदिक काल	8
3	महाजनपद काल (600–300 BC)	14
4	मौर्य साम्राज्य	20
5	मौर्योत्तर काल	29
6	गुप्त युग	36
7	गुप्तोत्तर काल	42
8	चोल साम्राज्य (850–1200 ईस्वी)	50
9	अरब आक्रमण	58
10	दिल्ली संतलत	63
11	मुगल साम्राज्य	73
12	मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य	88
13	मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन	99

1 CHAPTER

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित।**
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन व्हीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन चाइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

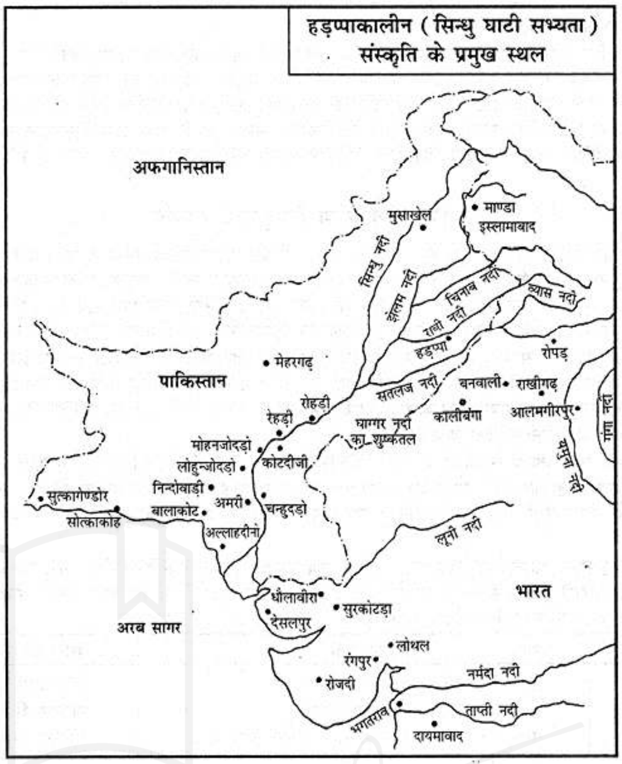

हड़प्पा सभ्यता के चरण

1. प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आ

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की दो पंक्तियाँ। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख) • 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।

Unleash the topper in you

रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।
- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए**।
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था**।

मृदभाण्ड:

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

1. <u>नगर नियोजन-</u>
   - **किलाबंधित**
   - **सुनियोजित सड़कें**
   - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
   - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
     - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
     - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
   - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)
   - कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं**।
   - **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
   - **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ एतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।

- **निर्माण** के लिए **पकी** और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**
- **मकान कच्ची की ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रर्णाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।

2. **विशाल स्नानागार-**
- गढ़ के टीले में
- **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
- टैंक तक जाने के लिए सीडियाँ थी।
- **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
- **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
- **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएं** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
- कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।

3. **धान्यागार-**
- **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
- **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
- वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थीं, (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
- **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।

4. **जल निकासी व्यवस्था-**
- हर घर में अपना **आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार** होता था।
- इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
- हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।

5. **कृषि-**
- सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
- जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
- जली हुई इंटो से बनी दिवारो की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ ग्रस्त था।
- **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
- **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
- **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफ़गानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
- **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
- **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
- **फसलें**- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।
- **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
- दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
- **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
- **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
- इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।

6. **पशुपालन-**
- लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
- वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
- **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
- **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
- **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा
- **ऊंट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
- **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
- **गैंडे के** साक्ष्य- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।

7. **व्यापार एवं वाणिज्य-**
- **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
- **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
- **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
- **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
- **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गेंडे का चित्रण** है।
- **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
- **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।

- **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं -** सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।
- हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**
  - **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**,
  - **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**,
  - **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान** , और
  - **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

बाहरी व्यापार मार्ग-

- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने **फारस, मेसोपोटामिया और चीन** जैसी कई अलग-अलग सभ्यताओं **के साथ व्यापार** किया।
- **अरब की खाड़ी** क्षेत्र, **एशिया** के **मध्य भागों**, **अफगानिस्तान** के कुछ हिस्सों और **उत्तरी** और **पश्चिमी भारत में व्यापार** करने के लिए भी जाना जाता है।

जिन वस्तुओं का व्यापार किया गया वे थे -

- **टेराकोटा** के बर्तन, **मनके**, **सोना**, **चांदी**, **रंगीन रत्न** जैसे फ़िरोज़ा और लैपिस लाजुली, धातु, चकमक पत्थर, **सीपियाँ** और **मोती।**

आंतरिक व्यापार मार्ग -

- **बलूचिस्तान**, **सिंध**, **राजस्थान**, **चोलिस्तान**, **पंजाब**, **गुजरात** और **ऊपरी दोआब**
- **प्रमुख व्यापार मार्ग -**
  - सिंध और दक्षिण बलूचिस्तान
  - सिंधु के मैदान और राजस्थान
  - सिंध और पूर्वी पंजाब
  - पूर्वी पंजाब और राजस्थान
  - सिंध और गुजरात
- **प्रारंभिक हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग- सिंध-बलूचिस्तान
- **परिपक्व हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग
  - **संभवत: नदी व्यापार।**
  - तटीय मार्ग **गुजरात को मकरान तट से जोड़ते हैं।**

8. भार और मापन-

- वज़न मापन के लिए एक **द्विआधारी प्रणाली** का पालन किया।
- **दशमलव प्रणालियों से अवगत**।
  - **अनुपात की इकाई** 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
  - **16 छटाँक** = 1 सेर और **16 आने** = 1 रुपये के बराबर थे।

- **कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -**
  - **चूना पत्थर -** सुक्कुर और रोहडी के चूना पत्थर की पहाड़ियों खनन।
  - **ताम्बा -** खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध।
  - **टिन -** तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया
  - **सोना -** ऊपरी सिंधु या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
    - पिकलीहल के मनके
    - **अर्द्ध कीमती पत्थर -** गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

9. शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

1. **प्रस्तर प्रतिमा -**
   - **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ।**
   - **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
   - **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।
2. **कांस्य कास्टिंग**
   - **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
   - इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता हैं । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
   - **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
   - **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
   - **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र
3. **टेराकोटा**
   - **पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता हैं।**
   - **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
   - **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।
4. **मुहर**
   - लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई
   - **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दांत से बनी ।

- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थीं
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।
- **मुहरें चित्रात्मक** थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर
- **लोथल- फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

5. **मनके**
   - **सोने, चांदी, तांबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने ।
   - मुख्य रूप से **बेलनाकार**
   - **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान

10. धातु, उपकरण और हथियार-
- **तांबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
- उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथीदांत** के औजारों **का उपयोग** किया।
- **लोहे का ज्ञान नहीं**

11. लिपि-
- **पहली बार 1853 में** खोजी गयी ।
- **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
- **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
- **लिपि –** चित्रात्मक
- **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन

12. मृदभाण्ड-
- **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**
- कृष्ण लोहित मृदपात्र।
- **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
- पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
- **आधार समतल** था।
- लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
- **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-**
  - **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
  - **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
  - **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।

13. धर्म-
- **धर्मनिरपेक्ष समाज**
- **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
- **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए **,** बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
- **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
- **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
- **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे**।
  - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
- **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं**।
- **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास**।
  - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें**।
  - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**

14. राजनीतिक संगठन-
- इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित**।
- **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर**।
- उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं**।
- लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

सभ्यता का पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन**, **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था**।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	
इतिहासकार	**पतन के कारण**
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वत्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मोर्टिमर व्हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

" यह भी उद्धृत किया गया है कि **आग और मलेरिया** जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी **सिंधु घाटी सभ्यता** के पतन के कारण थे।"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER

वैदिक काल (1500-600BC)

आर्यों की मूल पहचान

- वैदिक युग की **शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई।**
- **आर्य** मूल रूप से **स्टेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।**
- बाद में वे **मध्य एशिया चले गए** और फिर लगभग **1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए।** ऐसा माना जाता है कि उन्होंने **खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश** किया था।
- वे **सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र** (सात नदियों की भूमि) **में आकर बसे।** ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्यास, झेलम, परुष्नी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- **भाषा**- इंडो-यूरोपीय।
- **औजार** - सॉकेटेड कुल्हाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- **घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए)।
- वैदिक काल **1500 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच का** था।
- **आर्यों की मूल उत्पति -** विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य बहस का विषय।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास	
आर्यों का मूल निवास	**विद्वान**
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स म्यूलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्डो
बैक्ट्रिया	जे.सी.रॉड
सप्त सिंधु	डॉ अविनाश चंद्र दास और डॉ संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एल.डी.कला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान/ स्ट्रेपी	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

वैदिक साहित्य

- **वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी** का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
- **वेद** शब्द का अर्थ है **ज्ञान।**
- वैदिक साहित्य **कई शताब्दियों में विकसित हुआ** और इसे **पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया।**
- उन्हें बाद में **संकलित और लिखा गया** था,
- **सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11वीं शताब्दी** की है।
- **4 वेद** और **प्रत्येक के 4 भाग** हैं - संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।
- **वेद**

ऋग्वेद	• यह **वेदों में सबसे प्राचीन** है। • **1028 स्तोत्रों का संग्रह।** • **दस मंडलों** या पुस्तकों **में विभाजित।** • **भाषा**- वैदिक संस्कृत। • **उत्पत्ति**- 1500-1000 ई.पू. । • **स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं** जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में **देवी-देवताओं को समर्पित।** • **इंद्र- प्रमुख देवता** (स्वर्ग का राजा)। • **अन्य देवता**- आकाश देव, वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • **मंडल 2 - 7** - ऋग्वेद का **सबसे पुराना हिस्सा**, उन्हें "**पारिवारिक पुस्तकें**" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • **मंडल 8** - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • **मंडल 9** - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • **मंडल 1** - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • **मंडल 10** - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता हैं। • **एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति**- शाकल शाखा। • **उपवेद**- आयुर्वेद
सामवेद	• साम का **अर्थ** है "**माधुर्य**"। • **मंत्रों की पुस्तक।** • **16,000 राग** । • प्रार्थना की किताब या "**मंत्रों के ज्ञान का भंडार**"। • **1875 श्लोकों का उल्लेख**- केवल 75 मूल, शेष ऋग्वेद से। • **उपवेद**- गंधर्व वेद

यजुर्वेद	• यजुर नाम का **अर्थ "बलिदान"** है। • विभिन्न **बलिदानों से जुड़े अनुष्ठानों और मंत्रों** से संबंधित। • **दो प्रमुख विभाग-** ○ **शुक्ल यजुर्वेद/वजसनेय/श्वेत यजुर्वेद**- इसमें केवल मंत्र होते हैं। इसमें माध्यन्दिन और कण्व पाठ शामिल हैं। ○ **कृष्ण यजुर्वेद** - इसमें मंत्र और गद्य भाष्य शामिल हैं। इसमें कथक, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और कपिस्थलम पाठ शामिल हैं। • **वाजसनेयी संहिता**- शुक्ल यजुर्वेद में संहिता। • **उपवेद -** धनुर्वेद
अथर्ववेद	• **ब्रह्मा वेद के नाम से भी जाना जाता हैं।** • मुख्य रूप से **99 रोगों के उपचार पर केंद्रित**। • दो ऋषियों- **अथर्व और अंगिरा से जुड़े।** • उपचार उद्देश्यों के लिए **काले और सफेद जादू का अभ्यास** शामिल है। • **वैदिक संस्कृत में** रचित। • **6,000 मंत्रों** के साथ 730 स्तोत्र हैं जो 20 पुस्तकों में विभाजित हैं। • **दो पाठ -** पिप्पलाद और सौनाकिय संरक्षित हैं। • **मुंडक उपनिषद** और **मांडुक्य उपनिषद अंतर्निहित** हैं। • यह **लोगों की लोकप्रिय मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्णन** करता है। • **उपवेद** - शिल्प वेद

ब्राह्मण-ग्रन्थ

- चारों वेदों के **संस्कृत भाषा में प्राचीन समय में** जो **अनुवाद** थे 'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्' के अनुसार वे ब्राह्मण ग्रंथ कहे जाते हैं।
- **चार मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ** हैं- ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ।
- **वेद संहिताओं के बाद** ब्राह्मण-ग्रन्थों का **निर्माण** हुआ है।
- प्रत्येक वेद में एक य एक से अधिक ब्राह्मण हैं।
- **प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण हैं।**
- **ऋग्वेद** के **दो ब्राह्मण** हैं - (1) ऐतरेय ब्राह्मण और (2) कौषीतकी।
- **ऐतरेय** में **40 अध्याय** और **आठ पंचिकाएँ** हैं, इसमें गवामय, अग्निष्टोमन, द्वादशाह , सोमयागों, अग्निहोत्र तथा राज्याभिषेक ऐतरेय ब्राह्मण जैसा ही है।
- **कौषीतकी** से पता चलता हैं कि **उत्तर भारत में भाषा के सम्यक अध्ययन पर बहुत बल** दिया जाता था।

आरण्यक

- **अध्ययन गाँवों से दूर** अरण्यों/वनों में होता था, इसीलिए इन्हें आरण्यक कहते है।
- **गृहस्थाश्रम में यज्ञविधि का निर्देश** करने के लिए **ब्राह्मण-ग्रन्थ उपयोगी** थे और उसके बाद **वानप्रस्थ आश्रम** में **सन्यासी आर्य यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्वों का विवेचन** करने वाले आरण्यकों का अध्ययन करते थे।
- **उपनिषदों का विकास इन्हीं आरण्यकों से** हुआ। आरण्यको का **मुख्य विषय आध्यात्मिक** तथा **दार्शनिक चिंतन** है।

उपनिषद

- चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद गिनाये गए हैं, किन्तु **11 उपनिषद ही अधिक प्रसिद्ध** हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर।
- इनमें **छान्दोग्य और बृहदारण्यक अधिक प्राचीन** हैं।

वेदान्त

- **वेदों का "निष्कर्ष"** (अंत), भारत का **सबसे पुराना पवित्र साहित्य** है।
- **उपनिषदों (वेदों का विस्तार) पर लागू** होता है।
- **वेदांत मीमांसा** ("वेदांत पर चिन्तन**"), उत्तरा मीमांसा** ("वेदों के अंतिम भाग पर चिन्तन"), और **ब्रह्म मीमांसा** ("ब्राह्मण पर चिन्तन")।
- **3 मौलिक वेदांत ग्रंथ -**
  - **उपनिषद** (बृहदारण्यक, चंदोग्य, तैत्तिरीय और कथा जैसे लंबे और पुराने उपनिषद सबसे पसंदीदा हैं) ।
  - **ब्रह्म-सूत्र** (वेदांत-सूत्र), उपनिषदों के सिद्धांत की बहुत संक्षिप्त, एक-शब्द की व्याख्या।
  - **भगवद्गीता** ("भगवान का गीत") अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, उपनिषदों में दिए गए सिद्धांतों के समर्थन के लिए तैयार की गई थी।
- **बलिदान, समारोहों की निंदा** करता है और **वैदिक काल के अंतिम चरण** को दर्शाता है।

वेदांग

- स्मृति ग्रंथों का हिस्सा क्योंकि **वे परंपरा द्वारा सौंपे जाते हैं।**
- वेदांग का **शाब्दिक अर्थ "वेदों के अंग"** है।
- **600 ईसा पूर्व के दौरान संग्रहित हुआ।**
- **पूरक ग्रंथ**- वैदिक परंपराओं की समझ से संबंधित है।
- **मानवीय मूल** के माने जाते हैं और **सूत्रों के रूप में लिखे** गए हैं (विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संक्षिप्त कथन हैं)।
- **6 वेदांग** इस प्रकार हैं-

1. **शिक्षा -**
   - **स्वर शास्त्र का अध्ययन।**
   - यह संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों और वैदिक पाठ में शब्दों को जोड़ने और व्यक्त करने के तरीके पर केन्द्रित हैं।

Unleash the topper in you

2. **छंद -**
   - पद्य का अध्ययन, काव्य सामग्री से संबंधित।
   - प्रत्येक पद्य में अक्षरों की संख्या, उनके भीतर निश्चित **आकार/रूप का विश्लेषण** शामिल है।
3. **व्याकरण -**
   - विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों और वा**क्यों के निर्माण** को उपयुक्त को स्थापित करने के लिए व्याकरण और भाषा विज्ञान का विश्लेषण।
4. **निरुक्त -**
   - **व्युत्पत्ति विज्ञान** का **अध्ययन**, विशेष रूप से **पुरातन शब्दों के अर्थ को समझाने** के **संबंध** में।
5. **कल्प -**
   - **अनुष्ठान निर्देशों पर केन्द्रित** (बहुत पुराने और अप्रचलित) ।
   - **जीवन की घटनाओं से जुड़े संस्कार**, विवाह, जन्म और अन्य अनुष्ठानों के लिए वर्णित प्रक्रियाओं से संबंधित। यह व्यक्तिगत कर्तव्य और उचित आचरण की अवधारणाओं का भी अन्वेषण करता है।
6. **ज्योतिष -**
   - **शुभ समय का अध्ययन**, जो अनुष्ठानों का मार्गदर्शन और समय-निर्धारण करने के लिए ज्योतिष और खगोल विज्ञान का उपयोग करने की वैदिक प्रथा पर आधारित है।

वेदांग	अंगों से तुलना
शिक्षा	पैर
छंद	हाथ
व्याकरण	आंखें
निरुक्त	कान
कल्प	नाक
ज्योतिष	चेहरा

प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- **सप्त सिंधु** नामक सात नदियों की भूमि/देश में आकर रहने लगे।
- उनके क्षेत्र में **अफगानिस्तान**, **पंजाब** और **हरियाणा** के वर्तमान भाग **शामिल** हैं।
- **सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित** है और **सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय** (पवित्र नदी) है।
- **हिमालय** या **गंगा** का **कोई उल्लेख नहीं**।
- **समुंद्र** को **पानी** के **संग्रह** के रूप में जाना जाता हैं, सागर के रूप में नहीं।

राजनीतिक संरचना

- राजन के नाम से जाने जाने वाले राजा के साथ **राजशाही रूप।** राजशाही रूप, राजा को राजा के नाम से पुकारा जाता था।
- **पितृसत्तात्मक परिवार।**
- ऋग्वैदिक काल में **जन सबसे बड़ी सामाजिक इकाई** थी।
- **सामाजिक समूहीकरण :- कुल** (परिवार) → **ग्राम** → **विसु** → **जन।**
- **जनजातीय सभाओं को सभा और समितियाँ कहा जाता** था।
- आदिवासी राज्यों के **उदाहरण -** भरत, मत्स्य, यदु और पुरु।

सामाजिक संरचना

- **महिलाओं को सम्मानजनक स्थान** प्राप्त था।
- उन्हें **सभाओं** और **समितियों में भाग लेने की अनुमति** थी।
- **महिला विद्वान** थीं (अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववर और घोष)।
- **एकपतित्व** का **प्रचलन** था लेकिन **राजघरानों** और **कुलीन परिवारों में बहुविवाह** होता था।
- **बाल विवाह अप्रचलित** ।
- **सामाजिक भेद-भाव मौजूद** थे लेकिन **कठोर** और **वंशानुगत नहीं** थे।

आर्थिक संरचना

- वे **चरवाहे** और **पशुपालन** करने वाले लोग थे।
- वे **कृषि** का अभ्यास करते थे ।
- **परिवहन के लिए नदियों का उपयोग** करते थे।
- **सूती** और **ऊनी कपड़ों** को काटकर इस्तेमाल करते थे।
- प्रारंभ में, **व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से** किया जाता था, लेकिन बाद में **'निष्का' नामक सिक्कों का उपयोग** किया जाने लगा।

शिक्षा

- **मंत्रों का पाठ** किया - **छात्रों द्वारा दोहराया गया।**
- **उद्देश्य** - व्यक्ति की बुद्धि को तेज करना और उसके चरित्र का विकास करना।
- मुख्य रूप से **चरित्र में धार्मिक** और पिता द्वारा अपने **पुत्रों को प्रदान** की गई ।
- इस बारे में **कोई निश्चितता नहीं** है कि **लेखन की कला लोगों को ज्ञात थी या नहीं**।

संस्कृति और धर्म

- **प्रकृतिवाद बहुदेववाद**- वे प्राकृतिक शक्तियों जैसे पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा, आदि को देवताओं के रूप में पूजते थे।
- **पूजा की विधि**- यज्ञ।
- **प्रमुख देवता**-
  - **इंद्र** (गड़गड़ाहट के देवता) - सबसे महत्वपूर्ण देवता जिन्हें 250 भजन समर्पित किए गए हैं। पुरंदर या किलों को तोड़ने वाला भी कहा जाता है।
  - **अग्नि** (अग्नि के देवता) - दूसरे सबसे प्रमुख देवता। भगवान और लोगों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। जिन्हें 200 भजन समर्पित किए गए हैं।
- **महिला देवता** - उषा और अदिति।
- **कोई मंदिर नहीं** और कोई मूर्ति पूजा नहीं।
- **ऋग वैदिक भजन** ('सूक्ति') देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।
- **पूजा** और **बलिदान** - मुख्य रूप से 'प्रजा और पशु' के लिए यानी बढ़ती आबादी, मवेशियों की रक्षा, पुत्र प्राप्ति और बीमारी के खिलाफ किए जाते थे।
- **महत्वपूर्ण पुजारी**- महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र।

Toppersnotes Unleash the topper in you

ऋग्वेदिक युग में प्रयुक्त शब्द

गोधुली	समय का मानक
गव्युति	दूरी का मानक
दुहित्री	गाय का दोहन करने वाली
गोत्र	शासन
गण	वंशावली
गौरी	बैल
गौजीत	गाय का विजेता
वाप	बोना
श्रीनि	दरांती
क्षेत्र	खेती की भूमि
उर्वर	उपजाऊ क्षेत्र
धान	अनाज
घृत	घी
गोघना	अतिथि, जिन्हें पशुओं का मांस खिलाया जाता था
यव	जौ

उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भौगोलिक विस्तार

- **आर्य पूर्व की ओर बढे** और **पश्चिमी** और **पूर्वी उत्तर प्रदेश** (कोसल) और **बिहार पर कब्जा** कर लिया।
- धीरे-धीरे **ऊपरी गंगा घाटी में बस** गए।
- भारत के **तीन विस्तृत विभाजन** है-
    - **आर्यावर्त** (उत्तर),
    - **मध्यदेश** (मध्य भारत) और
    - **दक्षिणापथ** (दक्षिण)

राजनीतिक संरचना

- **छोटे राज्यों को मिलाकर महाजनपद जैसे बड़े राज्य** बनाए गए।
- **'जन' 'जनपद' बनने के लिए विकसित हुआ और राजा की शक्ति** में **वृद्धि** हुई।
- **बलिदान**- राजसूय (अभिषेक समारोह), वाजपेय (रथ दौड़) और अश्वमेध (घोड़े की बलि) - राजा द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किए जाते थे।
- **राजा की उपाधियाँ-** राजाविस्वजानन, अहिलभुवनपति, विराट, भोज, एकरात और सम्राट।
- **राजा का पद वंशानुगत** हो गया।
- **सभाओं** और **समितियों का महत्व कम** हो गया।
- **"राष्ट्र" शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ।**
- **आदिवासी सत्ता प्रादेशिक** बन गई।
- **कुरु 'जनपद' की राजधानियाँ-** हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ।
- **राजत्व की उत्पत्ति के संबंध में 2 सिद्धांत।**
    - **ऐतरेय ब्राह्मण** → राजत्व की उत्पत्ति की आम सहमति से चुनाव के तर्कसंगत सिद्धांत की व्याख्या की।
    - **तैत्रिरिय ब्राह्मण** → राजत्व की दिव्य उत्पत्ति की व्याख्या की।
- **राजा के पास पूर्ण शक्ति** थी - सभी विषयों का स्वामी।
- **शतपथ ब्राह्मण** - राजा अचूक और सभी प्रकार के दण्डो से मुक्त ।
- **ऋग्वैदिक काल की सभा बंद** कर दी गई।
- **राजा ने युद्ध**, **शांति** और **राजकोषीय नीतियों** जैसे मामलों **पर समिति** की सहायता और **समर्थन माँग ।**
- **सरकार** - इस अर्थ में **अधिक लोकतांत्रिक** कि आर्य जनजातियों के नेताओं के अधिकार को राजा द्वारा मान्यता दी गई थी।

इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण राजनीतिक पदाधिकारी-

पद	कार्य
व्रजपति	चारागाह भूमि के प्रभारी अधिकारी
पुरोहित	पुजारी
जीवग्रिभा	पुलिस अधिकारी
सेनानी	सुप्रीम कमांडर-इन-चीफ
ग्रामिणी	गांव का मुखिया
कुलपति	परिवार का मुखिया
स्पासा	जासूस
भगदुघा	राजस्व संग्रहकर्ता
मध्यमासी	मध्यस्थ
पलगला	दूत
संगरिहित्री	कोषाध्यक्ष
सुता	सारथी
स्थपति	मुख्य न्यायाधीश
महिषी	मुख्य रानी
गोविकर्तना	वनों और खेलों के रक्षक
अक्षवपा	मुनीम
तक्षना	बढ़ई
ग्राम्यवादिन	ग्राम न्यायाधीश

समाज

- **4 वर्ण आश्रम व्यवस्था** – व्यवसाय पर कम आधारित और अधिक वंशानुगत।

1. <u>**ब्राह्मण -**</u>
    - **बौद्धिक और पुरोहित वर्ग**।
    - **उत्कृष्टता** के एक उच्च स्तर को **बनाए** रखते थे और **अनुष्ठानों** का **विवरण** जानते थे ।
2. <u>**क्षत्रिय -**</u>
    - **लड़ाकू** वर्ग।
    - **युद्ध**, **विजय**, **प्रशासन**- इस वर्ग के **प्रमुख कर्तव्य।**
    - **2 क्षत्रिय राजा** - जनक और विश्वामित्र **ने ऋषि का यह प्राप्त** किया।

3. **वैश्य** -
    - **व्यापार, उद्योग, कृषि** और **पशुपालन** करते थे
    - वैश्यों में **धनी लोग- श्रेष्ठिन**- शाही दरबार में **अत्यधिक सम्मानित।**
4. **शूद्र** -
    - **हालत दयनीय** → इनकी हालत दयनीय थी।
    - **अछूत → अस्पर्शनीय थे।**
    - पवित्र अग्नि के पास जाने अर्थात् **यज्ञ करने** या पवित्र **ग्रंथों को पढ़ने का** कोई **अधिकार नहीं** ।
    - **शवों के दहन/ जलाने** का **अधिकार नहीं था।**

- **'द्विज' -** ऊपरी 3 वर्णों के पुरुष सदस्य - 'उपनयन' के हकदार हैं अर्थात् पवित्र धागा (जनेऊ) पहनना।
- **4 आश्रम व्यवस्था -**
    - **ब्रह्मचर्य** (छात्र) - जीवन के पहले 25 वर्ष।
    - **गृहस्थ** (गृहस्थ) - अगले 25 वर्ष।
    - **वानप्रस्थ** (उपवासी)- अगले 25 वर्ष।
    - **सन्यास** (तपस्वी)- जीवन के अंतिम 25 वर्ष।
- **जाति बहिर्विवाह** प्रचलित था।
- **कठोर सामाजिक पदानुक्रम** जिसने **सामाजिक गतिशीलता** को सिमित किया।
- **इस काल में संयुक्त परिवार की अवधारणा** में सामने आई।
- **परिवार में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन** किया जाता था।
- **समान गोत्र विवाह की अनुमति नही थी।**
- **'नियोग'** - एक नकारात्मक गतिविधि माना जाता है।
- **वर्तमान में 16 संस्कार हैं –** संस्कार व्यक्ति में सुधार लाने के लिए माने जाते हैं।

नियोग -
- **प्राचीन परंपरा** जिसमें एक **महिला** (जिसका पति या तो पिता बनने में असमर्थ है या बिना बच्चे के मर गया है) एक **बच्चे** को जन्म देने में मदद करने **के लिए** एक **व्यक्ति** से अनुरोध करती है और **नियुक्त करती है।**
- जिस व्यक्ति को नियुक्त किया गया है वह **एक सम्मानित व्यक्ति होगा।**

महिलाओं की स्थिति

- **इस काल में महिलाओं ने अपना उच्च स्थान खो दिया** जो ऋग्वैदिक युग में उनके पास था।
- उन्हें **उपनयन संस्कार का अधिकार नही** था।
- **उनके सभी संस्कार**, **विवाह को छोड़कर**, वैदिक **मंत्रों के पाठ** के **बिना** किए गए थे।
- **बहुविवाह** का प्रचलन था।
- कई **धार्मिक समारोह**, जो पहले पत्नी द्वारा किए जाते थे, **अब पुजारियों द्वारा** किए जाते थे।
- **राजनीतिक सभाओं में शामिल** होने की अनुमति **नहीं** थी।
- **बेटी का जन्म अवांछनीय** हो गया था।
- **बाल-विवाह** और **दहेज** की **प्रथा** धीरे-धीरे **बढ़ने लगी** ।

उत्तर वैदिक काल में विवाह के प्रकार

विवाह	विवरण
ब्रह्म विवाह	दहेज सहित समस्त वैदिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए समान वर्ण के लड़के से कन्या का विवाह।
दैव विवाह	पिता अपनी बेटी को दक्षिणा के हिस्से के रूप में एक पुजारी को दान करता है ।
अर्शा विवाह	दुल्हन की कीमत स्वीकार कर किसी पुरुष को कन्या दान करना।
प्रजापत्य विवाह	बिना दहेज के विवाह।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह।
असुर विवाह	दुल्हन खरीद कर विवाह।
पिशाच विवाह	बहला-फुसलाकर या रेप करके लड़की से शादी।
राक्षस विवाह	लड़की का अपहरण करके शादी।

शिक्षा

- एक **सुनियोजित शिक्षा प्रणाली थी।**
- छात्र **वेद, उपनिषद, व्याकरण, छंद, कानून, अंकगणित और भाषा** सीखते थे ।
- **उपनयन** समारोह - **शिक्षा की शुरुआत में** छात्रों को **शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाता** था ।
- **शिक्षक** (गुरु) के **घर में रहते थे** और एक **ब्रह्मचारी** के **पवित्र जीवन** का नेतृत्व करते थे, जिसका मुख्य कर्तव्य अध्ययन और शिक्षक की सेवा थी।
- **छात्रों को गुरु के आवास पर** निःशुल्क **भोजन** एवं **आवास की सुविधा दी जाती थी।**
- **पढ़ाई पूरी होने के बाद शिक्षकों को गुरु-दक्षिणा दी जाती थी ।**

भोजन और पोशाक

- **चावल** लोगों का **मुख्य भोजन** बन गया।
- **मांस खाने** का **चलन कम** हो गया।
- **गौ- हत्या की हत्या** को **घृणा** की दृष्टि से देखा जाता था।
- **कपास** के साथ-साथ **ऊन** का भी **प्रयोग** किया जाता था।

आर्थिक संरचना

- **कृषि मुख्य व्यवसाय** था।
- **धातुकर्म**, **मृदभाण्ड** और **बढ़ईगीरी** जैसे **औद्योगिक काम** भी थे।
- **बाबुल** और **सुमेरिया** जैसे दूर-दराज के **क्षेत्रों के साथ विदेशी व्यापार** था।

Unleash the topper in you

संस्कृति और धर्म

धार्मिक स्थिति

- **ऋग्वैदिक देवताओं**, वरुण, इंद्र, अग्नि, सूर्य, उषा आदि **ने अपना आकर्षण खो दिया।**
- **शिव**, **विष्णु**, **ब्रह्मा** आदि जैसे **नए देवता** प्रकट हुए।
- **रुद्र** - **शिव का विशेषण** - जल्द ही 'महादेव' (महान देवता) और चेतन प्राणियों (पशुपति) के स्वामी के रूप में **पूजा जाने लगा।**
- **प्रमुख संरक्षक - विष्णु।**
- **वासुदेव की पूजा भी शुरू हुई** - विष्णु के अवतार कृष्ण वासुदेव के रूप में माने जाते है।
- **अप्सरा**, **नागा**, **गंधर्व**, **विद्याधर** आदि **अर्ध देवता भी अस्तित्व में आए थे।**
- **दुर्गा** और **गणेश** की **पूजा की शुरुआत।**

अनुष्ठान और बलिदान

- **संस्कार** और **समारोह विस्तृत** और **जटिल** हो गए थे।
- पूजा में **बलिदान महत्वपूर्ण** हो गया ।
- **वैदिक स्तोत्र- यज्ञ में प्रयुक्त** होने वाले मंत्र।
- आर्यों ने **ब्राह्मण पुजारी की देखरेख में कई यज्ञ किए।**

धार्मिक दर्शन

- एक **नए बौद्धिक विचार का उदय हुआ।**
- **कर्म के सिद्धांत** में **विश्वास** - सभी कार्य, अच्छे या बुरे, उनका उचित समय पर फल मिलता है।
- **'मोक्ष' का सिद्धांत** - जब एक आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाती है और सार्वभौमिक आत्मा में मिल जाती है।"

आत्मा के स्थानांतरगमन का सिद्धांत -
व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा दूसरे शरीर में चली जाती है और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि वह अपनी सभी अपूर्णताओं से मुक्त नहीं हो जाती और सार्वभौमिक आत्मा में विलीन हो जाती है।

तपस्वी जीवन

- वैदिक लोग जीवन के तपस्वी आदर्श की अवधारणा में विश्वास करते थे क्योंकि **संस्कार और समारोह** स्वर्ग में **आनंद प्राप्त करने का एकमात्र साधन नहीं** थे।
- **तप और ब्रह्मचर्य के विचार** और भी महत्वपूर्ण परिणाम देते हैं।
- **तप** का अर्थ है **शारीरिक यातना के साथ ध्यान।**
- **तपस्वी** व्यक्ति **सांसारिक जीवन का त्याग** कर देते थे और **एकांत** में रहते थे - महाभारत और रामायण युग में व्यापक रूप से प्रचलित ।

वैदिक काल में होने वाले सोलह संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार	इसमें शिशु को छठे माह में अन्न खिलाया जाता है।
चूड़ाकर्म संस्कार	शिशु के तीसरे से आठवें वर्ष के बीच कभी भी मुंडन कराया जाता था।
कर्णभेद संस्कार	रोगों से बचने हेतु कर्ण आभूषण धारण करने के उद्देश्य से किया जाता था।
विद्यारंभ संस्कार	5वे वर्ष में बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता था।
उपनयन संस्कार	इस संस्कार के पश्चात् बालक द्विज हो जाता था । इस संस्कार के बाद बच्चे को संयमी जीवन व्यतीत करना पड़ता था। बच्चा इसके बाद शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता था।
वेदारंभ संस्कार	वेद अध्ययन करने के लिए किया जाने वाला संस्कार।
केशांत संस्कार	16 वर्ष हो जाने पर प्रथम बार बाल कटाना ।
गर्भाधान संस्कार	संतान उत्पन्न करने हेतु पुरुष एवं स्त्री द्वारा की जाने वाली क्रिया ।
पुंसवन संस्कार	स्मृति संग्रह के अनुसार गर्भ से पुत्र की प्राप्ति ।
सीमन्तोन्नयन संस्कार	गर्भवती स्त्री के गर्भ की रक्षा हेतु किए जाने वाला संस्कार ।
जातकर्म संस्कार	बच्चे के जन्म के पश्चात् पिता अपने शिशु को घृत या मधु चटाता था बच्चे की दीर्घायु के लिए प्रार्थना की जाती थी ।
नामकरण संस्कार	शिशु का नाम रखना ।
निष्क्रमण संस्कार	बच्चे के घर से पहली बार निकलने के अवसर पर किया जाता था ।
समावर्तन संस्कार	विद्याध्ययन समाप्त कर घर लौटने पर किया जाता था यह ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति का सूचक था।
विवाह संस्कार	वर वधु के परिणय सूत्र में बंधने के समय किया जाने वाला संस्कार।
अंत्येष्टि संस्कार	निधन के बाद होने वाला संस्कार ।

3 CHAPTER

महाजनपद काल
(600-300 BC)

युद्धकाल

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल	महाजनपद काल
जन	जन + जन = जनपद भूमि की अवधारणा	जनपद + जनपद = महाजनपद राज्य का निर्धारण
↓	↓	↓
पशुपालन	कृषि	मगध साम्राज्य व्यापक अधिशेष (कृषि में)

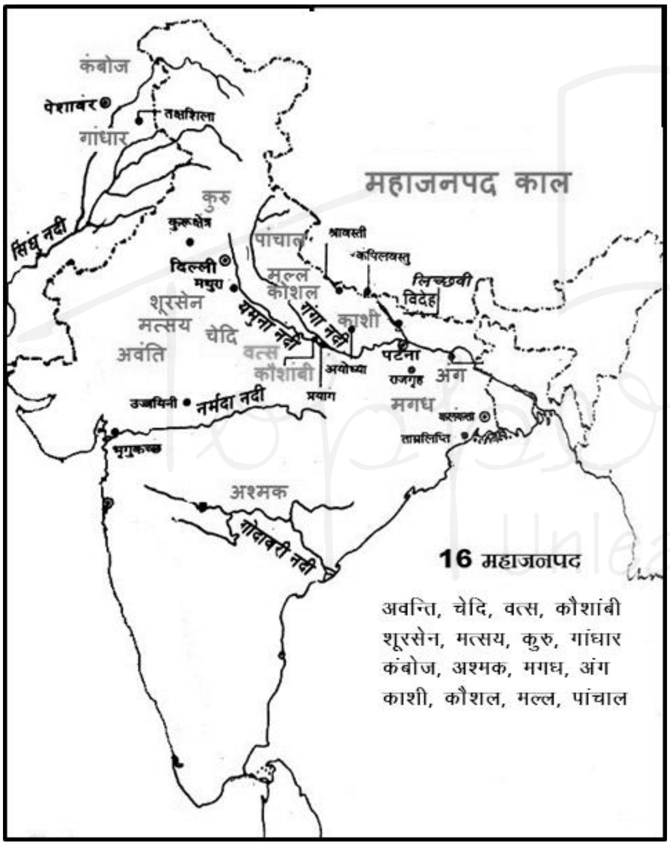

- **उद्भव –** छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद, लोहे के व्यापक उपयोग के कारण पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में बड़े क्षेत्रीय राज्य प्रमुखता में आए । जिससे समाज में योद्धा वर्ग का उदय हुआ।
- नए कृषि उपकरणों ने अधिशेष उत्पादन में मदद की। इन स्थितियों में लोगों ने अपनी जमीन पर कब्जा बनाए रखने के लिए पड़ोसी क्षेत्रों की कीमत पर विस्तार किया।
- **लोग** जन (जनजाति) के बजाय **जनपद (क्षेत्र) के प्रति निष्ठावान थे**।

- **16 प्रदेशों -षोडस महाजनपदों का उदय** हुआ।
- इन महाजनपदों का **उल्लेख सुत्त पिटक के अंगुत्तर निकाय**, **महावस्तु** (बौद्ध पाठ) और **भगवती सूत्र** (जैन पाठ) में किया गया है।
  1. राजशाही राज्य- अंग, अवन्ति, चेदि, वत्स, मगध, काशी, कोशल और गांधार।
  2. गणतंत्र राज्य- वज्जि, कुरु, कम्बोज, पांचाल और मल्ल।

महाजनपद	राजधानी
मगध	राजगृह (पुरानी राजधानी) और पाटलिपुत्र (नई)
गांधार	तक्षशिला
कम्बोज	हाटक (राजापुर)
कोशल	श्रावस्ती (उत्तर) और अयोध्या (दक्षिण)
मल्ल	कुशीनगर और पावा
पांचाल	अहिच्छत्र और काम्पिल्य
मत्स्य	विराटनगर
चेदि/चेती	शुक्तिमती
अंग	चंपा
अवन्ति	उज्जैन और माहिष्मती
वत्स	कौशाम्बी
अश्मक	पोताली या पोदना
सुरसेन	मथुरा
वज्जि	वैशाली
काशी	वाराणसी
कुरु	इंद्रप्रस्थ

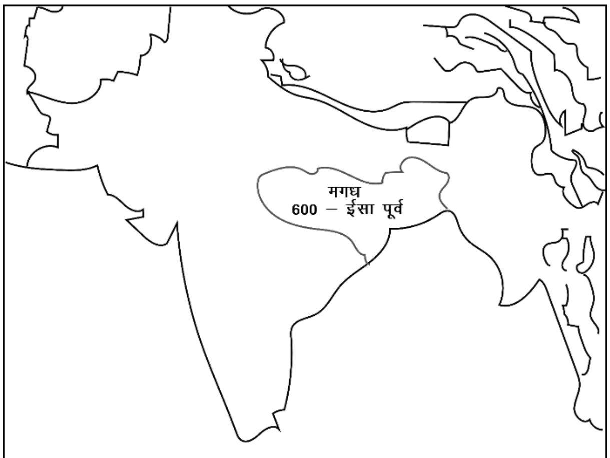

मगध राज्य लगभग 600 ईसा पूर्व, इसके विस्तार से पहले

- **अथर्ववेद में सबसे पुराना संदर्भ।**

1. अंग

- यह **मगध के पूरब** में था।
- **वर्तमान** में **बिहार** के मुंगेर और **भागलपुर** जिले में है।
- राजधानी- **चंपा** ।
- चंपा **उस समय भारतवर्ष के सबसे प्रसिद्ध नगरियों में से** थी।
- **मगध के साथ** हमेशा **संघर्ष** होता रहता था और अंत में **मगध ने इस राज्य को पराजित कर अपने में मिला लिया**।

2. अश्मक

- **दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद** है ।
- **राजधानी** -पोतन (नर्मदा और गोदावरी नदियों के बीच स्थित है) ।
- **राज्य के राजा**- ईक्ष्वाकु वंश के थे।
- इसका **अवन्ति के साथ निरंतर संघर्ष** चलता रहता था।
- धीरे-धीरे यह राज्य **अवन्ति के अधीन हो गया**।

3. अवन्ति

- प्राचीन काल में यहाँ **हैहय वंश का शासन** था।
- **आधुनिक मालवा** ही प्राचीन काल की अवन्ति है।
- **दो भाग** थे— उत्तरी अवन्ति और दक्षिणी अवन्ति।
- उत्तरी अवन्ति की राजधानी -**उज्जयिनी** ।
- दक्षिणी अवन्ति की राजधानी- **माहिष्मति ।**

4. चेदि

- **वर्तमान में बुंदेलखंड** में स्थित है ।
- **राजधानी**- शक्तिमती ।
- इस राज्य का **उल्लेख महाभारत में** भी है।
- **राजा -शिशुपाल**।

5. गांधार

- पाकिस्तान का पश्चिमी, अफगानिस्तान का पूर्वी क्षेत्र और कश्मीर का कुछ भाग है।
- राजधानी- **तक्षशिला** ।

6. काशी

- **राजधानी**- वाराणसी (वरुणा और असी नदियों की संगम पर स्थित है)
- राजा - **जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन**।
- **भारत वर्ष की सर्वप्रधान नगरी** थी।

7. कम्बोज

- **पश्चिम बदख्शां - प्रदेश** कंबोज महाजनपद कहलाता था।
- राजधानी - **हाटक या [राजापुर]** यह भारत से बाहर स्थापित है।

8. कोशल

- **राजधानी** - अयोध्या ।
- **द्वितीय राजधानी** - श्रावस्ती ।
- **राजा कंश को पालिग्रंथों में 'बारानसिग्गहो' कहा गया** है।
- **उसी** ने **काशी को जीत कर कोशल में मिला लिया** था।

9. कुरु

- राजधानी - **आधुनिक इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)** ।
- **राजा** - सुतसोम, कौरव और धनंजय।
- **कुरुधम्मजातक** के अनुसार, **लोग अपने सीधे-सच्चे मनुष्योचित बर्ताव के लिए अग्रणी माने जाते थे** और दूसरे राष्ट्रों के लोग उनसे धर्म सीखने आते थे।

Unleash the topper in you

10. मगध

- **मगध महाजनपद दक्षिण बिहार** के **पटना** व **गया** जिलो में **स्थित** है।
- **प्रारम्भिक राजधानी** राजगीर थी जो चारों तरफ से पर्वतों से घिरी होने के कारण गिरिब्रज के नाम से जानी जाती थी।
- **मगध की स्थापना** बृहद्रथ ने की थी।
- **सबसे शक्तिशाली महाजनपद** है।
- **प्रतापी शासक** - चंद्रगुप्त मौर्य।

11. मल्ल

- एक **गणसंघ** (गणतंत्र) **गोरखपुर** के आसपास था।
- **दो शाखाएँ** थी, एक की **राजधानी** - **कुशीनारा** थी जो वर्तमान कुशीनगर है तथा दूसरे की राजधानी **पावा या पव** जो वर्तमान **फाजिलनगर** है।

12. मत्स्य

- इसमें **राजस्थान के अलवर, भरतपुर तथा जयपुर जिले के क्षेत्र** शामिल थे।
- राजधानी - **विराटनगर**।

13. पांचाल

- **पश्चिमी उत्तर प्रदेश** में स्थित ।
- पांचाल की **दो शाखाएँ** थी — उत्तरी और दक्षिणी।
- **उत्तरी पांचाल** की **राजधानी अहिच्छत्र** और **दक्षिणी पांचाल** की **काम्पिल्य** ।

14. सुरसेन

- **राजधानी** - मथुरा।
- **अवन्ति का पुत्र यहाँ का राजा** था।
- पुराणों में **मथुरा के राजवंश को यदुवंश** कहा जाता था।
- **ज्ञान,बुद्धि और वैभव के कारण** यह नगर अत्यन्त **प्रसिद्ध** था।

15. वज्जि

- यह **आठ गणतांत्रिक**(गणतंत्र) **कुलों का संघ** था जो **उत्तर बिहार में गंगा के उत्तर** में **स्थित** था ।
- **राजधानी** - वैशाली
- इसमें **बिहार राज्य के दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, शिवहर व मुजफ्फरपुर जिले** सम्मिलित थे।

16. वत्स (वंश)

- उत्तर प्रदेश के **प्रयाग** (आधुनिक प्रयागराज) **के आस-पास केन्द्रित** है ।
- पुराणों के अनुसार, **राजा निचक्षु ने यमुना नदी के तट पर अपने राज्यवंश की स्थापना** तब **की** थी जब हस्तिनापुर राज्य का पतन हो गया था।
- **राजधानी** - कौशाम्बी।
- **4 सबसे शक्तिशाली महाजनपद** - मगध, वत्स, अवन्ति और कोशल।
- **मगध**- उत्तर में राजनीतिक गतिविधि का केंद्र।

मगध महाजनपद

भौगोलिक स्थिति

- **बिहार, गंगा नदी के दक्षिण में** और **लिच्छवी और अंग की विजय के बाद** आधुनिक बिहार और बंगाल को शामिल कर विस्तारित हुआ।
- **पटना, गया और शाहाबाद** के कुछ हिस्सों के आ**धुनिक जिलों पर शासन किया** ।
- **वत्स और अंग के मध्य स्थित उत्तर और पश्चिम में गंगा और सोन नदियों**, **पूर्व** में **चंपा नदी** और **दक्षिण** में **विंध्य नदियों** से घिरा हुआ
- **राजधानी**- राजगृह या गिरिव्रज।
- **सबसे पुराना राजवंश** - बृहद्रथ द्वारा स्थापित लेकिन बिंबिसार और अजातशत्रु के अधीन प्रमुखता में आया।
- मगध में **व्यापार और कृषि फल-फूल रही थी** – सैन्य अभियानों को गति प्रदान की ।
- मगध **सेना** - 4 भुजाएँ (चतुरंगा) -
  - पैदल सेना
  - घुड़सवार सेना
  - रथ
  - गज सेना (हाथी)

आर्थिक स्थितियाँ

- **लोहे का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**-कृषि का विकास।
- **भूमि** पर **निजी** और **राज्य का स्वामित्व**।
- **कृषि** का **विस्तार**।
- **सीता**- राज्य भूमि के संदर्भ में ।
- **उद्योग** और **शिल्प का विकास**
  - **श्रेणी** – गिल्ड संघ या कॉर्पोरेशन।
- **मृदभांड** -
  - **पूर्वी क्षेत्र** - काले और लाल मृदभांड़ों/ के बाद उत्तरी काला मार्जित मृदभांड NBPW (Northern Black Polished ware)।
  - **पश्चिमी क्षेत्र** - काले और लाल रंग के बाद मृदभांड चित्रित धूसर।

मगध के उदय के कारण

बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापद्म नंद जैसे कई उद्यमी और महत्वाकांक्षी शासकों के निरंतर प्रयास का परिणाम।

अन्य कारक -

1. **भौगोलिक कारक** -
   - **राजगीर** - यह पाँच पहाड़ियों की शृंखला से घिरा हुआ था इसलिए दुर्मेध था ।
   - **पाटलिपुत्र** - गंगा, गंडक और सोन **नदियों का संगम। इन** नदियों के मार्ग का उपयोग करते हुए सेना सभी दिशाओं की ओर बढ़ सकती थी।
2. **उपजाऊ भूमि:**
   - **अत्यधिक कृषि गतिविधियों ने इसे आत्मनिर्भर बनने में मदद की।**
   - **कृषि के लिए उपयुक्त वातावरण ।**
   - **भारी वर्षा - सिंचाई पर** कोई **निर्भरता नहीं** है।
3. **कच्चा माल:**
   - **गंगा के मैदान में लकड़ी - नदी परिवहन के लिए नावों का निर्माण।**
   - **व्यापार और रक्षा के लिए आसान परिवहन।**
   - **सबसे अधिक लौह भंडार - राजगीर।**
   - **अपनी सेना को प्रभावशाली हथियारों से सुसज्जित करने के लिए ।**
4. **नगरों का उदय और धातु मुद्रा का प्रयोग**
   - **मध्य गंगा के मैदानों में सबसे अधिक विकसित।**
   - **उत्तर-पूर्वी भारत के साथ व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई ।**

- **मगध राज्य ने वस्तुओं की बिक्री पर कर लगाया और भारी धन एकत्र किया।**
- **राज्य आसानी से करों को इकट्ठा करने के लिए धातुमुद्रा उपयोग।**

5. **बड़ी सेना:**
   - **नंद के पास 200,000 पैदल सेना, 60,000 घुड़सवार सेना और लगभग 6000 युद्ध हाथी थे।**
   - **युद्ध हाथियों का प्रयोग करने वाले प्रथम शासक - देश** के पूर्वी भाग से।

6. **समाज:**
   - **किरातों [नेपाल में पाए जाते है] और मगधों का निवास।**
   - **वैदिक लोगों के साथ एक सुखद जातीय मिश्रण प्राप्त किया।**
   - **वैदिक प्रभाव वाले पूर्व राज्यों की तुलना में आसान विस्तार।**

हरण्यक राजवंश (545-412 ईसा पूर्व)

- मगध पर शासन करने वाला **पहला राजवंश** है।
- **राजधानी-** राजगीर
- **संस्थापक –** बिंबिसार

1. **बिंबिसार (544-492 ईसा पूर्व)**
   - **अंग राज्य पर कब्जा** कर लिया और उसे **चंपा में** अपने बेटे **अजातशत्रु के अधीन रखा।**
   - **बुद्ध** के **समकालीन।**
   - **स्थायी सेना** रखने वाला **पहला राजा।**
   - शक्ति स्थापित करने के लिए **वैवाहिक गठजोड़ शुरू किया।**
   - **उनकी पत्नियाँ-** कोसाला देवी (कोशल की बेटी और प्रसेनजीत की बहन), चेल्लाना (वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी, अजातशत्रु की माँ) और खेमा (पंजाब में मद्रा वंश के मुखिया की बेटी)।
   - उन्होंने अपने **शाही चिकित्सक जीवक को** उज्जैन के राजा चंदा प्रद्योत के पास **अवंती राजा के अनुरोध पर पीलिया का इलाज कराने के लिए भेजा।**

2. **अजातशत्रु (492-460 ईसा पूर्व)**
   - **बिंबिसार के पुत्र** - मगध सिंहासन पर कब्जा करने के लिए अपने पिता को मार डाला।
   - **पाटलिग्राम** में एक **नई राजधानी** की स्थापना की।
   - **कोसल राजा प्रसेनजित को हराया** और प्रसेनजित को उसकी बेटी का विवाह उससे करने के लिए मजबूर किया। **काशी दुबारा मगध के कब्जे मे आ गया ।**
   - उनके शासनकाल के दौरान, **बुद्ध की मृत्यु** हो गई।
   - 483 ईसा पूर्व में **राजगृह में पहली बौद्ध परिषद् का संरक्षण** किया।
   - **वैशाली के लिच्छवियों को हराकर 16 वर्ष का युद्ध समाप्त किया ।**
   - **दो हथियारों का इस्तेमाल किया-** एक **गुलेल** (महाशिलाकंटक) और एक **झूलती हुई गदा** के साथ एक **ढका** हुआ **रथ** (रथमुस्ला)।

3. **उदयिन (460-444 ईसा पूर्व)**
   - **अजातशत्रु का पुत्र** था।
   - **पटना** में गंगा और सोन नदी के संगम पर एक **किले का निर्माण** किया।
   - राजधानी को **राजगीर से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया गया।**
   - **अनुरुद्ध**, **मुंडा** और **नागदासक** उदयिन के **उत्तराधिकारी** थे।

शिशुनाग राजवंश (413 ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व)

- **मगध पर शासन करने वाला दूसरा राजवंश** था।
- **संस्थापक**: शिशुनाग।

1. **शिशुनाग:**
   - **शिशुनाग वंश की नींव** रखी।
   - इससे पहले **वाराणसी के अमात्य** थे।
   - **राजधानी वैशाली में अस्थायी थी** । जिसकी राजधानी उज्जैन थी ।
   - **अवंती के प्रद्योत वंश को हराकर अवंती को** मगध साम्राज्य का **हिस्सा बनाया।**

2. **कालाशोक:**
   - **पुराणों में काकवर्ण के नाम से जाना जाता हैं ।**
   - **राजधानी** को **वैशाली से पाटलिपुत्र** स्थानांतरित किया।
   - 383 ईसा पूर्व में **वैशाली में द्वितीय बौद्ध परिषद का संरक्षण** किया।

नंद राजवंश (345-321 ईसा पूर्व)

- **पहला गैर-क्षत्रिय राजवंश** था।
- **मगध के शक्तिशाली शासकों** ने 200,000 पैदल सेना, 60000 घुड़सवार सेना और 3000 से 6000 युद्ध हाथियों **की एक विशाल सेना** को पोषित किया ।
- संस्थापक: **महापद्मनन्द ने शिशुनाग शासक कलाशोक का वध किया और नंद वंश की नींव** रखी।

1. **महापद्म नंद**
   - **राजधानी** - पाटलिपुत्र।
   - **एकरत** (अन्य सभी शासक राजकुमारों के विनाशक), **अहिच्छत्र**, **सर्वक्षत्रांतक** या **उग्रसेन** होने **का** दावा किया।

- पूरे **उत्तर भारत पर कब्जा** कर लिया।
- **इक्ष्वाकु**, **पांचाल**, **कौरव**, **अश्मक**, **शूरसेन** और अन्य **समकालीनों पर विजय** प्राप्त की।
- एक **प्रभावी कराधान प्रणाली** बनाए रखी ।
- **खारवेल के हाथीगुम्फा शिलालेख** में **महापद्म नंदा द्वारा कलिंग** पर **विजय** प्राप्त करने **का उल्लेख** है।
- कलिंग से जयचिन्ह के रूप में **जीना की एक मूर्ति से आए**

2. **धनानंद**
   - **वंश** का **अंतिम शासक था ।**
   - उनके **शासनकाल के दौरान**, **सिकंदर ने** भारत पर **हमला किया।**
   - **डायो डोरस** (ग्रीक इतिहासकार) **द्वारा अग्रमस या जंड्रमस के रूप में संदर्भित।**
   - **पाणिनि के अनुसार**, धनानंद के सामान्य बदसला [भदशाला] ने एक **विशेष माप मानक का आविष्कार किया** जिसे **नंदोपक्रमनी** के नाम से जाना जाता है।
   - **चंद्रगुप्त मौर्य** (चाणक्य की मदद से) **से हार गए** थे, जिन्होंने मगध में मौर्य वंश की नींव रखी थी।

महाजनपद के युग में सामाजिक और भौतिक जीवन

- इस राज्य में **शहरी अर्थव्यवस्था** की शुरुआत हुई ।
- मध्य गंगा के मैदानों में **खाद्य प्रसंस्करण की उन्नत प्रणाली** थी ।
- पशुपालन का स्थान कृषि ने प्राथमिक व्यवसाय के रूप में ले लिया, जिसमें चावल पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में उत्पादित मुख्य अनाज था।
- **उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभांड की शुरुआत-** आमतौर पर **अचित्रित** लेकिन कभी-कभी चित्रित **पीले और हल्के सिंदूरी रंग** में बनाए जाते थे।
- मकान **कच्ची ईंट** और **लकड़ी से बने** होते ये - पटना में **लकड़ी के तख्तों की खोज हुई ।**
- **विभिन्न नगरों की स्थापना** जैसे- पुरा या नगर (किला शहर या शहर), निगम (बाजार शहर), राजधानी (राजधानी शहर), नागरक (छोटा शहर), महानगर (कौशाम्बी, काशी, राजगीर, सरस्वती, अयोध्या, वैशाली जैसे बड़े शहर) पाटलिपुत्र, चंपा और कपिलवस्तु
- श्रेणियों का संगठन – 18 शिल्पियों के संघ
- **व्यापार और उधार** देने की गतिविधियाँ सेठी नामक **उच्च-स्तरीय व्यवसायियों द्वारा की जाती थीं।** व्यापारी और कारीगर वेसा (वाराणसी में) और सद्दालपुट्टा (वैशाली में) नामक इलाकों में रहते थे।
- **कपड़ा, हाथी दांत, बर्तन** आदि जैसे **शिल्प उत्पादों का निर्यात** किया जाता था ।
- 2 प्रमुख अंतरक्षेत्रीय मार्ग - **उत्तरापथ और दक्षिणापथ।**

महाजनपद के युग के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था

- **राजा** महामात्र या अमात्य, मंत्रिन (मंत्री), सेनानायक (कमांडर) और आयुक्त जैसे अधिकारियों द्वारा सहायता और **सर्वोच्च अधिकार** प्राप्त हुआ।
- नौकरशाहों की नियुक्ति उच्च जातियों से की जाती थी ।
- **सभा और समिति पूरी तरह से गायब** हो गई और इसके स्थान पर, एक छोटा **सलाहकार निकाय या जिसमें मुख्य रूप से ब्राह्मण शामिल** थे, जिसे **परिषद्** कहा जाता था, जो राजा की सहायता करता था।
- **ग्राम प्रधान -** ग्रामभोजक, ग्रामीण या ग्रामिका ग्रामीण प्रशासन की देखरेख करते थे।
  - **ग्रामीणों से करों की वसूली** और **कानून व्यवस्था** बनाए रखने के लिए जिम्मेदार।
  - **क्षत्रियों और ब्राह्मणों को करों से छूट** दी गई थी।
  - **बलि (आदिवासियों द्वारा स्वैच्छिक भुगतान) अनिवार्य** हो गई और बलिसधाकों नामक अधिकारियों द्वारा एकत्रित की गई।
- **टोल संग्रह अधिकारी – शौल्किक/शुल्काध्यक्ष ।**

कानूनी और सामाजिक व्यवस्था

- इस काल में **धर्मसूत्रों को प्रमुखता** प्राप्त हुई।
- **दीवानी और फौजदारी कानून वर्ण विभाजन पर आधारित** थे
- **समाज पितृसत्तात्मक** मानदंडों पर आधारित था।

विदेशी आक्रमण

फारसी आक्रमण

- **छठी शताब्दी ईसा पूर्व का पहला भाग** → छोटी रियासतों का उदय हुआ।
- उत्तर-पूर्व भारत - **छोटे राज्य शक्तिशाली मगध साम्राज्य में विलीन** हो गए।
- **उत्तर पश्चिम भारत** - राजनीतिक रूप से **अस्थिर**
- **गांधार, कंबोज और मद्र जैसे राज्यों के बीच लगातार संघर्षों ने हिंदूकुश दर्रे के माध्यम** से इस क्षेत्र को आक्रमणकारियों के प्रति कमजोर बना दिया ।
- **आक्रमणकारियों को भारत की समृद्ध संपत्ति ने आकर्षित किया।**

साइरस (558 - 530 ईसा पूर्व)

- **अचमेनिद साम्राज्य के संस्थापक** (प्राचीन ईरान) है।
- **भारत के उत्तर-पश्चिमी हिस्से पर आक्रमण** किया।
- **गांधार, कंबोज और मद्र पर विजय प्राप्त की।**
- सिंधु के पश्चिमी भाग की सभी जनजातियों ने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया।